आदर्श lekt dh lkoZHkkSe 0;oLFkk

मध्यस्थ दर्शन का एक सूत्र है, मानव जाति सही में एक है, गलती में अनेक। जैसे यदि एक करोड़ बच्चों को गणित का एक प्रश्न दिया जाये, सही उत्तर देते हैं तो सबका एक ही होता है, गलत हों तो करोड़ होते हैं। सही समझ के आधार पर ही सही उत्तर दिया जा सकता है। अन्यथा अनुमान या मान्यता के आधार पर ही जवाब दिया जायेगा, जिसके गलत होने की संभावना रखी ही रहेगी। वर्तमान राज्य व्यवस्था ऐसी गलती का ज्वलंत उदाहरण है। इसका आरंभ चुनाव प्रक्रिया से ही होता है। इसमें यह मान लिया गया है कि वोट देते समय वोटर गलती नहीं करेगा! इसलिए पूरे नियम–कानून और तंत्र का जोर इस पर रहता है कि सभी को स्वेच्छा से वोट डालने दिये जायें। ऐसा होने पर व्यवस्था को सफल मान लिया जाता है।

अब जब इन राज्यों और उसके आधारों की समीक्षा करते हैं तो सवालों की झड़ी लग जाती है। पहला सवाल तो यही है कि रहस्यमयी तरीके से यह कैसे मान लिया गया कि वोटर, वोट देते समय गलती नहीं करेगा! जबकि सही चुनने का सार्वभौम आधार आज तक स्पष्ट नहीं है। अभी तक व्यक्ति के सही–गलत होने का आधार उसकी धार्मिक, सामुदायिक, सामाजिक और वैचारिक मान्यताएं ही रही हैं, जो सबकी अपनी–अपनी हैं। ऐसा व्यक्ति एक के लिए सही तो दूसरे के लिए गलत होता ही है। ऐसे में विरोध बना ही रहता है। शोषण, संघर्ष, द्रोह, विद्रोह इसी का परिणाम हैं। विश्व का कोई भी राज्य इनसे मुक्त नहीं है। इनके आधार पर दूसरे से तुलना कर अपनी सफलता का दावा कर दिया जाता है। आदर्शवाद के रामराज्य और मार्क्सवाद के साम्यवाद की पहुंच भी यहीं तक थी।

अधिकतर लोग व्यवस्था के इन ढांचों से कभी संतुष्ट नहीं रहे। किसी व्यवस्था की परंपरा न बनना इसका प्रमाण है। इस समीक्षा के सार में दो बातें निकलती हैं, एक तो यह कि सदा–सदा सही रहने वाले व्यक्ति की पहचान कैसे हो, इसकी जांच का कोई तरीका आम आदमी के पास तक नहीं पहुंचा है। दूसरा या तो सफल राज्य का सही मापदंड आज तक दुनिया के सामने नहीं आया या ऐसे किसी प्रयास की तरफ दुनिया की नजर नहीं गयी है। यहां एक ऐसे ही अनुसंधानपूर्वक हुए प्रयास से परिचित कराने की कोशिश है।

यह अनुसंधान किया है अमरकंटक निवासी दार्शनिक 93 वर्षीय अग्रहार नागराज ने। उन्होंने 'अखंड राज्य, सार्वभौम व्यवस्था' का प्रारूप सामने रखा है। अभी तक प्रस्तुत मौखिक या लिखित धर्म, राज्य, अर्थ, समाज या शिक्षा संविधानों में शासन करने की नीतियां ही केंद्र में रही हैं। प्रजा को अपने अनुसार जीने–रहने के लिए विवश किया है। ऐसा न करने पर उसे पापी या अपराधी घोषित कर दंडित किया है। यही विरोध का मूल कारण रहा है क्योंकि संसार का हर व्यक्ति बिना शासित हुए स्वतंत्रतापूर्वक सही जीना–रहना चाहता है। आदमी का डिजाइन ही ऐसा है। हर व्यक्ति जन्म से जिज्ञासु, सत्यवक्ता, न्याय का याचक और सही कार्य–व्यवहार करने का इच्छुक होता है। उसे यदि इन गुणों के साथ जीने का वातावरण उपलब्ध हो तो वह न कभी झूठ बोलना चाहेगा, न शोषण करना चाहेगा, न किसी के साथ अन्याय करेगा। नैतिकता, चरित्र, मूल्य उसकी पूंजी होते हैं। ऐसा व्यक्ति अपने हर सवाल का जवाब पाकर स्वयं में समाधानित रहता है। श्रमपूर्वक परिवार में समृद्धि हासिल करता है। समाज में अभयता और जीवों, वनस्पति, धरती के साथ बिना नुकसान पहुंचाए सहअस्तित्वपूर्वक रहता है। हर व्यक्ति की मूल चाहत इतनी ही है और यही लक्ष्य भी। यही सही व्यक्ति का स्वरूप है और यही पहचान।

ध्यान देने की बात यह है कि ऐसे व्यक्ति का मूल्यांकन वह ही कर पायेगा, जो खुद सही जीता हो, गलत जीने वाला आदमी, सही का मूल्यांकन करने की योग्यता नहीं रखता, न ही इसका अधिकारी होता है। विडंबना यह रही कि अभी सही की सार्वभौम सूचना ही लोगों के पास नहीं है, इसलिए सही जीने वाले व्यक्तियों के उपलब्ध होने या वर्तमान चुनाव व्यवस्था में सामने आने की बात करना ही बेमानी है। इसलिए आवश्यकता है जो उर्जा मौजूदा ढांचों का विरोध करने में खर्च हो रही है, वह उर्जा लोगों तक सही की सूचना उपलब्ध कराने और वातावरण निर्मित करने में खर्च की जाये। इसका आरंभ भी हो चुका है, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, पंजाब, बिहार, उड़ीसा आदि में अनेक परिवार एवं संस्थान इसमें लगे हैं।

इस प्रकार जीते हुए परिवार ही मानवीय संविधान की नींव हैं। ये ही परिवार विस्तारित होकर परिवार समूह सभा का गठन करते हैं, फिर वहीं से फैलते हुए विश्व राज्य सभा तक पहुंचते हैं। यह दस सोपानीय सार्वभौम व्यवस्था है। इसके समानांतर ही इसी क्रम से एक परिवार से शुरू होकर विश्व परिवार तक अखंड समाज की परिकल्पना है। वर्तमान चुनाव प्रणाली में गलत में सही का चुनाव करना होता है जबकि इस प्रारूप में सही में से ही व्यवस्था की जिम्मेदारी लेने वाले सही व्यक्ति का स्थान प्रतिनिधि प्रणाली से सुनिश्चित होता है।

- अजय यादव

अधिक जानकारी के लिए www.madhyasth.info देखें

Hk’Vkpkj ls fuiVus dk Qkewyk

पूर्व राष्ट्पति डॉ एपीजे अब्दुल कलाम ने कुछ माह पहले भ्रष्टाचार से निपटने के लिए फार्मूला सुझाया था। उस समय लोकपाल बिल को लेकर सरकार और अन्ना हजारे के बीच खींचतान जोरों पर थी। इसी खींचतान में इस फार्मूले की तरफ किसी का ध्यान नहीं गया जबकि भ्रष्टाचार मिटाने में यह काफी मददगार साबित हो सकता है। यह फार्मूला मूल्यों पर आधारित शिक्षा के द्वारा भ्रष्टाचार को खत्म करने की बात करता है, क्योंकि प्राथमिक स्तर पर भ्रष्टाचार व्यक्ति के संस्कार से जुड़ी समस्या है, बाद में व्यवस्था से। मौजूदा व्यवस्था और कानून रूपयों या धन के लेन–देन होने के बाद की स्थिति को भ्रष्टाचार मानते हैं जबकि यह घटना भ्रष्टाचार का फलन मात्र है। भ्रष्टाचार तो उससे बहुत पहले आरंभ हो चुका होता है। इसे इस तरह समझ सकते हैं, जैसे किसी व्यक्ति को बुखार आ गया यानी शरीर का तापमान बढ़ गया। ऐसे में कोई चिकित्सक यह सलाह नहीं देता कि मरीज को ठंडे पानी से नहलाकर या फ्रिज में रखकर तापमान कम कर दिया जाये बल्कि वह तापमान बढ़ने के कारण खोजकर, उसका विधिवत उपचार करता है। जरूरत पर बर्फ आदि का भी सहारा लिया जाता है। अभी सारा प्रयास कानून और दंड के भय से भ्रष्टाचार का बुखार उतारने का है। बहुत सारी उर्जा और संसाधन लगाने के बाद, इसमें थोड़ी–बहुत कमी अवश्य दिखती है पर खत्म हो गया हो, ऐसा पूरी दुनिया में कहीं नहीं दिखता।

इसलिए जोर दिया जा रहा है कि जब भी भ्रष्टाचार जड़ से खत्म होगा, वह शिक्षा–संस्कारपूर्वक निर्धारित होने वाली विधि व्यवस्था से ही होगा। बशर्ते कि मूल्य शिक्षा के नाम पर परंपरागत नैतिक शिक्षा ही न परोस दी जाये क्योंकि वर्तमान शिक्षा पद्धतियों में ऐसा ही हुआ है। इनमें आदमी को केवल सुविधाभोगी मान लिया गया। उसी आधार पर लाभोन्माद, भोगोन्माद और कामोन्माद की शिक्षा दी जा रही है। इसीलिए आज ज्यादा शिक्षित व्यक्ति ही भ्रष्टाचार में ज्यादा लिप्त हैं। इनके विकल्प के रूप में ही चेतना विकास मूल्य शिक्षा का प्रस्ताव है। यह प्रस्ताव मानव पर किये गये गहन अनुसंधान का परिणाम है। यह अनुसंधान किया है अमरकंटक निवासी दार्शनिक 93 वर्षीय अग्रहार नागराज ने।

अनुसंधान का निष्कर्ष है कि आदमी सदा से ही प्राण भय, मान भय, धन भय और पद भय से पीड़ित रहा है। वह हर भय से मुक्ति चाहता है। इसके लिए उसने शस्त्र, शास्त्र, जन, धन एकत्र कर सुरक्षा घेरा मजबूत करने की कोशिश की है। इनके बल पर हिंसक जानवरों और प्राकृतिक आपदाओं से तो कुछ भयमुक्ति पा ली पर आदमी की अमानवीयता का भय अभी भी बड़ी समस्या बना हुआ है। वर्तमान में आम आदमी को पुलिस का भय इसका बड़ा उदाहरण है। कुछ ऐसी ही स्थिति उन नजदीकी लोगों की है जो पड़ोसी या संगी–साथी कहे जाते हैं। कब कौन मन में ईर्ष्या पाल ले, कब अपमानित कर दे, कब नुकसान पहुंचा दे, कहा नहीं जा सकता। इससे बचने के लिए ही हर आदमी शस्त्र, शास्त्र, जन, धन एकत्र करने में जुटा है। इसी के लिए पूरी छीना–झपटी है। जो भ्रष्टाचार के रूप में दिखता है। अविश्वास, रिश्तों में टूटन, नैतिक पतन और भय का वातावरण इसके लक्षण हैं।

अनुसंधान का निष्कर्ष है कि दुनिया का हर आदमी संबंधपूर्वक सुखी होकर ही जीना चाहता है, दूसरे को भी सुखी करना चाहता है, जिसे अपना संबंधी मानता है, उसका पोषण और सहयोग भी करता है। जिसे संबंधी नहीं मानता उससे भयग्रस्त रहता है। इस स्थिति

में यदि कमजोर साबित होता है तो खुद शोषित होता है और यदि बड़े पद पर है तो शोषण करता है। वर्तमान सरकारी व्यवस्था में नीचे से उपर तक यही हो रहा है। छोटा कर्मचारी निरीह जनता का शोषण करता है, बड़ा अधिकारी कर्मचारी का। इसका उपाय केवल संबंधों की पहचान होना ही है। यह मुश्किल दिख जरूर रहा है पर मुश्किल है कतई नहीं क्योंकि चेतना विकास मूल्य शिक्षा ऐसा अभिनव प्रस्ताव और गारंटी है, जिसे सुनने–समझने के बाद आदमी किसी से शोषित नहीं हो पायेगा और चाहकर भी किसी का शोषण कर नहीं पायेगा। ऐसे सैकड़ों उदाहरण हैं, जिन्होंने इस प्रस्ताव को सुनने के बाद अपने आस–पास की भ्रष्ट व्यवस्था को बदल दिया या फिर उस अव्यवस्था के समानांतर ईमानदार व्यवस्था खड़ा करने में लगे हैं।

- अजय यादव

अधिक जानकारी के लिए www.madhyasth.info देखें

Ekkuo /keZ dh O;k[;k

अस्तित्व में हर इकाई धर्म सहित ही है। इकाई से उसके धर्म को अलग नहीं किया जा सकता है। इकाई का आचरण ही उसके धर्म को व्यक्त करता है या इकाई का धर्म आचरण के रूप में प्रकट है, प्रमाणित है। जैसे भौतिक वस्तुओं का धर्म अस्तित्व अर्थात होना है। प्राणावस्था यानी वनस्पति जगत का धर्म अस्तित्व सहित पुष्टि अर्थात होना और पुष्ट होना है। इस प्रकार हर इकाई का आचरण निश्चित है, जिसके कारण अस्तित्व में उसकी उपयोगिता और भागीदारी है। आचरण की निश्चितता ही इकाई की उपयोगिता है, जैसे लोहा, पत्थर, गाय, कुत्ता आदि, इन सबका आचरण हर देश व काल में निश्चित है। अस्तित्व में हर प्रजाति की वस्तुओं का धर्म तथा आचरण निश्चित है। इसी तरह मानव जाति का भी धर्म एक है और जब धर्म एक है तो आचारण भी एक सा ही होना चाहिए।

धर्म के प्रति अनभिज्ञ होने के कारण मानव का आचरण अनिश्चित हो गया। मानव समझपूर्वक ही धर्म को पहचानता है तथा आचरण के रूप में प्रमाणित करता है। विगत में आध्यात्मिक या भौतिकवादी विधि से मानव का आचरण निश्चित नहीं हो पाया, जिसका कारण अस्तित्व का अध्ययन नहीं होना है। जबकि मानव स्वयं में एवं परस्परता में निश्चित आचरण की चाहना एवं कामना करता रहा है। मानवीयतापूर्ण आचरण ही मानव का निश्चित आचरण है जो सबके लिए वांछित है, वह चाहे गरीब हो, अमीर हो, ज्ञानी हो या अज्ञानी हो। प्रचलित धर्मग्रंथों व गुरूओं से सार्वभौम आचरण निकलकर आया नहीं। सभी धर्मों में धर्म के नाम पर कुछ पूजा–उपासना पद्धतियों, कुछ प्रतीक चिह्न आदि प्रचलित हैं किंतु आचरण के रूप में एक–दूसरे के विरोधाभासी दिखते हैं। इसके कारण मानव जाति कई संप्रदायों में बंट गयी।

किसी इकाई के धर्म का अर्थ है, इकाई का व्यवस्था में होना। मानव धर्म व्यवस्था में जीने पर ही प्रमाणित होता है। फिर समग्र व्यवस्था में भागीदार होता है। मानव धर्म समझ में आने पर मानवीयतापूर्ण आचरण प्रमाणित होगा। मानवीय आचरण में जीता हुआ मानव ही मानव धर्म में प्रतिष्ठित होता है। मानव धर्म सुख, शांति, संतोष, आनंदपूर्वक जीना ही है। हर मानव सुख की आशा सहित ही है और यही मानव धर्म है।
मानवीयतापूर्ण आचरण तीन भागों में व्याख्यायित होता है, मूल्य, चरित्र, नैतिकता। परस्पर संबंधों की पहचान, मूल्यों का निर्वाह तथा उभयतृप्ति ही मूल्य के रूप में है, जिससे परिवार में व्यवस्था प्रमाणित होती है। चरित्र का स्वरूप है स्वधन, स्वनारी–स्वपुरूष एवं दयापूर्ण कार्य व्यवहार। इससे मानव सामाजिक होता है। नैतिकता का स्वरूप है धर्मनीति तथा राज्यनीति, जिसकी व्याख्या तथा प्रमाणित होने से अखंड समाज का स्वरूप प्रमाणित होता है।

- बी आर अग्रवाल

अधिक जानकारी के लिए www.madhyasth.info देखें